मुसाफ़िर

मैं खड़ा हूँ ,जी हाँ!
मुसाफ़िर के इंतजार में
जाना है मुझे सफ़र में
कुछ ही दूर सही
इनके साथ,इनकी गाड़ी में
जैसे अर्जुन के साथ चढ़ते थे
कुरुक्षेत्र में स्वयं केशव
बनाते थें , रण की नीतियाँ
मानो कुछ ऐसा ही
चिरपरिचित मुसाफ़िर के साथ
बनाता हूँ कल की सारी
योजनाएँ ,जिसको अम्लकर
अपने जीवन के कुछ पल को
यादगार बनाता हूँ
वह मुसाफ़िर !
कोई सगा-सा होता है
जिनका होना ,जीवन में
इतना अनिवार्य है कि
इसके वगैर भूल सकते हो
आप खिल-खिलाकर हँसना
हँसकर अल्हड़ मस्ती में खोना
तनाव के सलवटों को दूर करना
खुशियों-सी खुशबू को महकाना
तब फिर क्या जरूरी नहीं ?
जीवन के पथ पर
कदम से कदम मिलाकर
साथ चलने के लिये
एक सच्चा मुसाफ़िर का बनाना ।

नेतलाल यादव